

# Laxmi Chalisa in Hindi PDF

Presented by Spiritual Curiosity ([spiritualcuriosity.org](http://spiritualcuriosity.org))

---

## श्री लक्ष्मी चालीसऱ

### ॥ दोहा ॥

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास ।

मनोकामना सिद्ध करि, परुवहु मेरी आस ॥

### ॥ सोरठा ॥

यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करुं ।

सब विधि करौ सुवास, जय जननि जगदम्बिका ॥

### ॥ चौपाई ॥

सिन्धु सुता में सुमिरौ तोही । ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोही ॥

तुम समान नहिं कोई उपकारी । सब विधि पुरवहु आस हमारी ॥

जय जय जगत जननि जगदम्बा । सबकी तुम ही हो अवलम्बा ॥

तुम ही हो सब घट घट वासी । विनती यही हमारी खासी ॥

जगजननी जय सिन्धु कुमारी । दीनन की तुम हो हितकारी ॥

विनवौं नित्य तुमहिं महारानी । कृपा करौ जग जननि भवानी ॥

केहि विधि स्तुति करौं तिहारी । सुधि लीजै अपराध बिसारी ॥

कृपा दृष्टि चितववो मम ओरी । जगजननी विनती सुन मोरी ॥

ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता । संकट हरो हमारी माता ॥

क्षीरसिन्धु जब विष्णु मथायो । चौदह रत्न सिन्धु में पायो ॥  
चौदह रत्न में तुम सुखरासी । सेवा कियो प्रभु बनि दासी ॥  
जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा । रूप बदल तहं सेवा कीन्हा ॥  
स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा । लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा ॥  
तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं । सेवा कियो हृदय पुलकाहीं ॥  
अपनाया तोहि अन्तर्यामी । विश्व विदित त्रिभुवन की स्वामी ॥  
तुम सम प्रबल शक्ति नहीं आनी । कहं लौ महिमा कहों बखानी ॥  
मन क्रम वचन करै सेवकाई । मन इच्छित वांछित फल पाई ॥  
तजि छल कपट और चतुराई । पूजहिं विविध भांति मनलाई ॥  
और हाल में कहों बुझाई । जो यह पाठ करै मन लाई ॥  
ताको कोई कष्ट नोई । मन इच्छित पावै फल सोई ॥  
त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणि । त्रिविध ताप भव बंधन हारिणी ॥  
जो चालीसा पढ़ै पढ़ावै । ध्यान लगाकर सुनै सुनावै ॥  
ताकौ कोई न रोग सतावै । पुत्र आदि धन सम्पत्ति पावै ॥  
पुत्रहीन अरु सम्पत्ति हीना । अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना ॥  
विप्र बोलाय कै पाठ करावै । शंका दिल में कभी न लावै ॥  
पाठ करावै दिन चालीसा । ता पर कृपा करै गौरीसा ॥  
सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै । कमी नहीं काहू की आवै ॥  
बारह मास करै जो पूजा । तेहि सम धन्य और नहिं दूजा ॥  
प्रतिदिन पाठ करै मन माही । उन सम कोइ जग में कहुं नाहीं ॥

बहुविधि क्या मैं करों बड़ाई । लेय परीक्षा ध्यान लगाई ॥  
करि विश्वास करै व्रत नेमा । होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा ॥  
जय जय जय लक्ष्मी भवानी । सब में व्यापित हो गुण खानी ॥  
तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं । तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहिं ॥  
मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै । संकट काटि भक्ति मोहि दीजै ॥  
भूल चूक करि क्षमा हमारी । दर्शन दजै दशा निहारी ॥  
बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी । तुमहि अछत दुःख सहते भारी ॥  
नहिं मोहिं ज्ञान बुद्धि है तन में । सब जानत हो अपने मन में ॥  
रुप चतुर्भुज करके धारण । कष्ट मोर अब करहु निवारण ॥  
केहि प्रकार मैं करों बड़ाई । ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई ॥

## ॥ दोहा ॥

त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो वेगि सब त्रास ।  
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु को नाश ॥  
रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर ।  
मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर ॥